शिक्षा में समावेशन की चुनौतियाँ

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ–226017,उ.प्र.

शोध सारांश

समावेशी शिक्षा कक्षा में विविधताओं को स्वीकार करने की एक मनोवृत्ति है जिसके अन्तर्गत विविध क्षमता वाले बालक सामान्य शिक्षा प्रणाली में एक साथ अध्ययन करते हैं। समावेशी शिक्षा दर्शन के अन्तर्गत प्रत्येक बालक अद्वितीय होता है और उसे अपने सहपाठियों की भाँति विकसित करने के लिए कक्षा में विविध प्रकार के शिक्षण की आवश्यकता हो सकती है। बालक के पीछे रह जाने पर उसको दोषी नहीं ठहराया जा सकता बल्कि उसे कक्षा में भली प्रकार समाहित न कर पाने का जिम्मेदार अध्यापक को स्वयं समझना चाहिए।

Keywords: *समावेशी शिक्षा ,शिक्षा में समावेशन ,चुनौतियाँ*

शिक्षा मानव का निर्माण कर उसे व्यवहार कुशल बनाती है। इसी विकास कार्य हेतु विद्यालय जो कि समाज का लघु प्रतिबिम्ब होता है। इस प्रकार का वातावरण उपस्थित करते हैं जहाँ राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होना है और इस कार्य को सुस्थिर दिशा प्रदान करने का दायित्त्व शिक्षकों को जाता है जो इस उत्तर दायित्त्व का निवर्हन अति सरलता, सहजता से करते हैं। शिक्षक की कक्षा–शिक्षण सम्बन्धी योग्यता एवं दक्षता उसकी कक्षा में पढ़ाई जाने की भूमिका पर आधारित होती है। प्रभावशाली शिक्षण में विशेष कौशलों का समावेश होता है जिन्हें शिक्षक कक्षा शिक्षण में प्रयोग करता है तथा उत्तम शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा भी तैयार किये जा सकते हैं।

समावेशी शिक्षा में शिक्षक को अक्षम और सामान्य बालकों के कक्षा शिक्षण में अपेक्षित कौशलों का होना अपेक्षित है, जिससे शिक्षक स्वयं के ज्ञान से अक्षम बालकों की पहचान करें उनकी समस्याओं को समझ कर उसी के अनुरूप उनका विकास करें। पाठ्यक्रम में अनुशीलन कर शिक्षण कार्य को सार्थक बनायें, जिससे अक्षम सामान्य बालकों को पर्याप्त अधिगम हो। विद्यालयी विशिष्ट सेवाओं का उपयोग कर अक्षम बालकों का विकास करें। विद्यालय में संसाधित कक्ष की व्यवस्था इस प्रकार से करें जहाँ पर अक्षम बालक स्वयं अवकाश समय का सदुपयोग कर सके। शिक्षकों को विशिष्ट शिक्षा सम्बन्धी नये–नये आयामों की जानकारी होनी चाहिए जिससे उनका उपयोग अक्षम बालकों को शिक्षा के लिए किया जा सके। अक्षम बालकों की शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम का अनुशीलन, व्यूहरचना निर्माण, सहायक सामग्री, उपकरणों का प्रयोग–प्रशिक्षण आदि प्रमुख है। जिनकी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक जानकारी अध्यापक को अवश्य होनी चाहिए समावेशी शिक्षा प्रकिया के तहत अक्षम एवं सामान्य बालकों की कक्षा में शिक्षण कार्य इस प्रकार से होना चाहिए जिससे अक्षम एवं सामान्य बालक लाभान्वित हो सके।

शिक्षा प्रणाली की वह व्यवस्था जो अपने आपमें सभी को समान रूप से शिक्षा उपलब्ध कराने तथा सभी का सम्पूर्ण विकास करने की भावना को समाहित किये हुए हो समावेशी शिक्षा

कहलाती है । 'समावेशी शिक्षा' शब्द अंग्रेजी के 'इनक्लुसिव एजुकेशन' (Inclusive education) का हिंदी पर्याय है । अक्सर यह माना जाता है कि समावेशी शिक्षा की अवधारणा का विकास पाश्चात्य देशों में हुआ था जहाँ से यह पुष्पित, पल्लवित और प्रसारित हुई है । "समावेशी शिक्षा या एकीकरण के सिद्धांत की ऐतिहासक जड़ें कनाडा और अमेरिका से जुड़ी हैं।" लेकिन अगर गौर से देखा जाय तो "भारत में समावेशी विकास कि अवधारणा कोई नई नहीं है । प्राचीन धर्मग्रंथों का यदि अवलोकन करें, तो उनमें भी सभी लोगों को साथ लेकर चलने का भाव निहित है । 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'में भी सबको साथ लेकर चलने का ही भाव निहित है ।" समावेशी शिक्षा व्यवस्था की प्रथम पाठशाला त्रेता युग में गुरू वशिष्ठ के आश्रम को मानना चाहिए जहाँ पर राजकुल के राजकुमारों तथा निषादराज गुह जैसे उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के छात्र अध्ययन कार्य के अलावा समस्त कार्य व्यापार भी साथ–साथ किया करते थे । समावेशी शिक्षा व्यवस्था की द्वितीय पाठशाला समावेशन द्वापर युग में मुनि संदीपनी के आश्रम को मानना चाहिए जहाँ कृष्ण और सुदामा जैसे धनी और निर्धन शिष्य साथ–साथ अध्ययन किया करते थे । जो कि समावेशीकरण प्रक्रिया का भी एक अच्छा उदहारण प्रस्तुत करते हैं । एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं को संपूरित के लिए एक सामान्य छात्र और एक मंदबुद्धि या विकलांग छात्र को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मुहैया कराया जाता है । जिसमें सामान्य छात्र तथा विशेष छात्र साथ–साथ विद्यालय में अधिकतर समय बिताते हुए अधिगम करते हैं । शुरुआती दौर में समावेशी शिक्षा की परिकल्पना सिर्फ विशेष छात्रों (मंदबुद्धि और विकलांगों) के लिए उपयुक्त माना गया था लेकिन धीरे–धीरे प्रत्येक शिक्षक और शिक्षार्थी को इसकी उपयोगिता का अहसास हुआ जिससे इसकी आवश्यकता में विस्तार होता चला गया । अतः एक शिक्षक को अपने शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए इस सिद्धांत को अपनाते हुए विस्तृत शिक्षण उपागम को समाहित करके अध्यापन कार्य को छात्रों के लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाना चाहिए ।

शिक्षा का समावेशीकरण यह निर्धारित है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामान्य छात्र और दिव्यांग छात्र को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए। इसमें एक सामान्य छात्र एक दिव्यांग छात्र के साथ विद्यालय में अधिकतर समय बिताता है। गुरूकुल के जमाने में समावेशी शिक्षा की परिकल्पना सिर्फ ऐसे छात्रों के लिए की गई थी जो छात्र औसत से अधिक तेज था। परन्तु इक्कीसवीं सदी में हर शिक्षक को इस अवधारणा की विस्तृत दृष्टिकोण में अपनी कक्षा में व्यवहार में लाना चाहिए जिससे वह हर बालक को विशेष बना सके। समावेशी शिक्षा की शुरूआत ऐतिहासिक तौर पर कनाडा और अमेरिका से मानी जाती है। पुरानी शिक्षा पद्धति की जगह नई शिक्षा विधियों का प्रयोग वर्तमान समय में होने लगा है। समावेशी शिक्षा विशेष विद्यालय या विशेष कक्षा को स्वीकार नहीं करती है वह तो दुनिया की हर माँ के बच्चे को बराबर प्रेम शिक्षा देने में विश्वास करती है। इक्कीसवीं सदी में अशक्त बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग करना अब मान्य नहीं है। दिव्यांग बच्चों को भी सामान्य बच्चों की तरह ही शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है। साधारणतः छात्र एक कक्षा में अपनी आयु के हिसाब से रखे जाते हैं चाहे उनका आकादमिक स्तर ऊँचा या नीचा ही क्यों न हो। शिक्षक साधारण और विशेष सभी बच्चों से एक जैसा व्यवहार करते हैं। अशक्त बच्चों की मित्रता जानबूझकर अक्सर सामान्य बच्चों के साथ करवाई जाती है ताकि जिससे उनमें हीन भावना पैदा न हो और आपस में प्रेम की भावना उपजे। ऐसी प्रक्रियाओं से ही समूह समुदाय बनता है। ऐसी सहभागिताओं से यह दिखाया जाता है कि एक समूह दूसरे समूह से

श्रेष्ठ नहीं है। ऐसा करने से बच्चों में आपस में प्रेम और सहयोग की भावना बढ़ती है।

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के उपायों के अंतर्गत कुशल शिक्षकों को समावेशी कक्षाओं की सामान्य विधियाँ का पालन करना चाहिए। शिक्षक कक्षा में सहयोग की भावना बढ़ाने के लिए कुछ तकनीकों का उपयोग करते हैं जैसे– अच्छे वातावरण का निर्माण करना, समुदाय भावना को बढ़ाने के लिए खेलों का आयोजन करवाना जिससे उनमें भाईचारे एवं विश्ववंधुत्व की भावना का विकास हो सके । विद्यार्थियों को छोटी–मोटी समस्या के समाधान में शामिल करना चाहिए जिससे उनकी समझ विकसित हो और वे निर्णय लेने में सक्षम हो सकें । किताबों और गीतों का आदान–प्रदान करवाना तथा सम्बंधित विचारों का कक्षा में आदान–प्रदान करके छात्रों में समुदाय की भावना बढ़ाने के लिए कार्यक्रम तैयार करना आदि विभिन्न क्रियाकलापों के लिए छात्रों का दल बनाना चाहिए, जिसके कारण उन्हें आभास हो कि एकता में शक्ति होती है । बच्चों के लिए लक्ष्य–निर्धारण करवाना, अभिभावकों का सहयोग लेकर विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करना चाहिए । इसके आलावा समान्तर शिक्षा, वैकल्पिक शिक्षा, समूह शिक्षा आदि विधियों के साथ–साथ विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की सेवा लेकर दल शिक्षण पद्धति द्वारा सामान्यतः व्यवहार में आने वाली समावेशी क्रियाएं अपनाकर समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को सुविधा पूर्वक प्राप्त किया जा सकता है

समावेशी शिक्षा में आने वाली समावेशन सम्बन्धित चुनौतियों से निपटने के लिए सबसे पहले हरएक को अपने मन मस्तिष्क को बस थोड़ा सा जागृत करने की आवश्यकता है । जिससे कि वह समावेशन की चुनौतियों से आसानी से निपट सकते हैं– इसके लिए छोटे–छोटे कुछ अधोलिखित हैं जिनका ध्यान रखकर इस समस्या का निराकरण कर निजात पाई जा सकती है–

1. दृष्टिकोण में परिवर्तन ।
2. विद्यालय में बाधा रहित वातावरण ।
3. प्रवेश की नीति में परिवर्तन ।
4. पाठ्यक्रम का निर्धारण ।
5. नई तकनीक का प्रयोग ।
6. विशेषज्ञीय सेवाएँ।
7. परीक्षा के दौरान विशेष प्रावधान ।
8. शासन की अन्य योजनाएँ ।

इन सभी नीतियों को अपनाकर समावेशी शिक्षा में आने वाली समस्याओं का समाधान आसानी से करके समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चतुर्वेदी शिखा, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ, 2008
2. मित्तल एस0 आर, एकीकृत और समावेशित शिक्षा, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
3. झा एम0 एस0, समावेशी शिक्षा दृष्टिकोण और प्रक्रियाएँ, एस प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
4. शर्मा डॉ0 विमलेश, समावेशित विशिष्ट शिक्षा, शारदा पुस्तक सदन, नई दिल्ली, 2016
5. कर्ण महेन्द्र नारायण–भारत में सामाजिक परिवर्तन, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, जून 2003
6. इग्नू–सामाजीकरण और शिक्षा, ई.एस.ओ. –।।,मद्रित पाठ्यवस्तु, जून 2008
7. शर्मा प्रेमपाल–'शिक्षा में सम्पूर्ण सुधार का इंतजार', दैनिक जागरण,कानपुर 5 जून, 2017
8. सक्सेना, प्रो0 उदय वीर, भारतीय शिक्षा का इतिहास, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2008